

मुकदमों का विवरण

साजिव

वी.

केरल राज्य

(2011 की आपराधिक अपील सं. 1134) नवंबर 09, 2023

[अभय एस. ओका और संजय करोल, जेजे।] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: चाहे अभियुक्त की दोषसिद्धि और सजा-ए 10 और ए 11 यू/एस. एस. 302, 307, और 326/120 B आई. पी. सी. और एस. 55(ए), (एच), (आई) और एस। 57 (ए) (1) (ii) नीचे दी गई अदालतों द्वारा आबकारी अधिनियम कानून में टिकाऊ है।

दंड संहिता, 1860-एस. एस. 302, 307 और 326/120 B-अकबरी अधिनियम-ss। 57(ए) (1) (ii) और 55-शराब विषाक्तता की साजिश-ए 1, ए 3, ए 10 और ए 11 के साथ अवैध शराब व्यवसाय के सरगना ने ए 1 द्वारा संचालित आउटलेट के माध्यम से गैरकानूनी लाभ के लिए स्पिरिट के साथ मिथाइल अल्कोहल मिलाने की साजिश रची, और इसके सेवन के परिणामस्वरूप 7 निर्दोष लोगों की मौत हो गई, 11 लोगों में अंधापन हो गया और 40 लोग घायल हो गए-इस अदालत तक सजा ए 1 बरकरार रही-आरोपी ए 10 और ए 11 यू/एस। 302, 307 और 326/120 B और s। 55(ए), (एच), (आई) और एस। 57 (ए) (1) (ii) आबकारी अधिनियम और अपराधों के लिए आजीवन कारावास की सजा। 302 और एस। 57(ए) (1) (ii), अन्य वाक्यों के साथ, नीचे दिए गए न्यायालयों द्वारा-हस्तक्षेप:

आयोजित किया गया: नहीं बुलाया गया-ए 10 और ए 11 के बीच संबंध, और ए 1 के साथ उनके संबंध; और साजिश रचने में उनमें से प्रत्येक द्वारा निभाई गई भूमिका, यदि कोई हो, तो बायोसोल की आपूर्ति और अवैध शराब की आपूर्ति और बिक्री में दुर्भावना स्थापित की गई-मृतक व्यक्तियों की मृत्यु का कारण मिथाइल अल्कोहल के कारण विषाक्तता थी, इसलिए व्यक्तियों को भी इस तरह के सेवन के परिणामस्वरूप उनके शरीर के अंगों पर गलत चोटें आईं-अभियोजन पक्ष ए 1 के साथ ए 10 और ए 11 की आपराधिक साजिश की शुरुआत करने में सफल रहा-आरोपी दोषी 242 को सही ठहराने में विफल रहा।

उनके खिलाफ पेश होने वाली परिस्थितियाँ-यू/एस से बाहर।57(ए) (1) (ii) मानव जीवन को खतरे में डालने वाले हानिकारक पदार्थों को मिलाने के लिए, जो उनके कारण भी हो सकते हैं।6 और साक्ष्य अधिनियम का 8 लागू-इसके अलावा, मिथाइल अल्कोहल के परिवहन, बॉटलिंग और बिक्री से संबंधित सबूत हैं-अभियुक्त व्यक्तियों को पूरे सामान्य उद्देश्यों के लिए साजिश में स्थापित किया गया है-ए 10 और ए 11 यू/एस की सजा।55(ए), (एच) और (आई) को बरकरार रखा गया-इस प्रकार, साजिश के हिस्से के रूप में मिथाइल अल्कोहल की बिक्री और स्पिरिट के साथ मिश्रण में आरोपी व्यक्तियों की भागीदारी, जिसके परिणामस्वरूप कई निर्दोष व्यक्तियों की मौत हो गई और घायल हो गए-ए 10 और ए 11 यू/एस एस की दोषसिद्धि साबित हुई।302, 307, 326 और 120 बी आई. पी. सी. और आबकारी अधिनियम के 57 (ए) (1) (ii), नीचे दी गई अदालतों द्वारा बरकरार रखे गए।[पैरा 16,37,41,42,45,46,48-50]

आपराधिक कानून-समवर्ती दोषसिद्धि-हस्तक्षेप-जब आवश्यक हो:

आयोजित किया गया:यह तब होता है जब अभियोग विकृत होता है; आरोप अस्वीकार्य साक्ष्य पर आधारित या निर्मित होता है; और नीचे की अदालतों ने महत्वपूर्ण साक्ष्यों पर विचार नहीं किया है या गलत तरीके से खारिज नहीं किया है जो संतुलन को अभियुक्त के पक्ष में झुका देंगे।[पैरा 51]

दंड संहिता, **1860** -धारा **120** बी-आपराधिक षड्यंत्र-आपराधिक षड्यंत्र बनाने के लिए आवश्यक तत्व-स्पष्ट किया गया।[पैरा **35**] उच्चतम न्यायालय नियम, **2013**-आदेश **XX**, आर. **5**, उप नियम **2** और **3**-आपराधिक अपील-उप-नियम **3** के संशोधन के लिए सुझाव:

आयोजित किया गया:आर के उप-नियम 2 और 3 का अवलोकन।5 यह दर्शाता है कि आजीवन कारावास या मृत्युदंड की सजा से जुड़ी आपराधिक अपीलों में मूल अभिलेखों की भौतिक प्रतियां मांगी जानी चाहिए-यह सुझाव दिया जाता है कि उप-नियम 3 में 'मूल अभिलेख' शब्दों के सामने 'सॉफ्ट कॉपी' शब्द डालने के लिए संशोधन किया जाए, जिसके परिणामस्वरूप मूल अभिलेखों की ई-प्रतियां मांगी जाएं-इससे अदालत में ऐसे अभिलेखों की बहुत तेजी से उपलब्धता होगी और साथ ही पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक दृष्टिकोण भी होगा-अभिलेख की सॉफ्ट कॉपी की ऐसी मांग को उन मामलों तक बढ़ाया जाना चाहिए जहां बरी करने या दोषसिद्धि के आदेश के खिलाफ अनुमति दी जाती है-साथ ही, अभिलेखों की सॉफ्ट कॉपी, एक बार प्राप्त होने के बाद पक्षकारों की ओर से पेश होने वाले वकील को प्रदान की जानी चाहिए।[पैरा 58] 243

न्यायिक अवमूल्यन-भौतिक गवाहों के बयानों को रिकॉर्ड में नहीं रखे जाने की प्रथा-प्रभाव अधिनियम:

आयोजित किया गया:इस तरह की प्रथा अक्सर बार-बार स्थगन का कारण बनती है, जो लंबित होने और अपीलों के निपटारे में देरी की जड़ तक जाती है-इस प्रकार, सर्वोच्च न्यायालय नियम, 2013 के आदेश XX के नियम 5 के उप नियम 3 में मूल रिकॉर्ड शब्दों के सामने 'सॉफ्ट कॉपी' शब्द

डालकर संशोधन करने का सुझाव दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मूल रिकॉर्ड की ई-प्रतियां त्वरित गति से मांगी जाती हैं-सर्वोच्च न्यायालय नियम, 2013-आदेश XX,आर. 5, उप नियम 2 और 3।[पैरा 56]

शहरों और अन्य संदर्भों की सूची

रामनारायण पोपली बनाम सी. बी. आई. (2003) एस. सी. सी. (क्रोरल) 869; पी. के. नारायणन बनाम केरल राज्य (1995) 1 एससीसी 142; मोहम्मद.नौशाद बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 784; हरि और अन्न. वी.यूपी राज्य। 2021 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 1131; कोली लखमनभाई चनाभाई बनाम गुजरात राज्य (1999) 8 एस. सी. सी. 624; पुलिस अधीक्षक बनाम नलिनी और अन्य के माध्यम से राज्य। (1999) 5 एससीसी 253:1999 (3) एससी 1; याकूब अब्दुल रजाक मेमन बनाम महाराष्ट्र राज्य (2013) 13 एससीसी 1:2013 (15) एस. सी. आर. 1; अरविंद सिंह बनाम महाराष्ट्र राज्य

(2021) 11 एस. सी. सी. 1; हरियाणा राज्य बनाम कृष्ण (2017) 8 एस. सी. सी. 204:[2017] 7 एससीआर 251; फूला सिंह बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य एआईआर 2014 एससी 1256: [2014] 3 एस. सी. आर. 551; इंद्रकुंवर बनाम छत्तीसगढ़ राज्य 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन

1364; चंद्रन बनाम केरल राज्य (2011) 5 एससीसी 161:[2011] 8 एससीआर 273; पी. एन. कृष्ण लाल बनाम केरल सरकार 1995 पूरक (2) एस. सी. सी. 187:[1994] 5 पूरक।

एस. सी. आर. 526; मेकला शिवैया बनाम ए. पी. राज्य। (2022) 8 एससीसी 253; रावासाहेब

और ओआरएस. वी.कर्नाटक राज्य (2023) 5 एस. सी. सी. 391-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2011 की आपराधिक अपील सं. 1134।

2004 के सी. आर. एल. ए. No.792 में एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय के दिनांकित 23.07.2010 के निर्णय और आदेश से।

के साथ

2015 की आपराधिक अपील No.567।

SAJEEV बनाम केरल राज्य 244 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 15 एस. सी. आर.

रूप:

आर बसंत, वरिष्ठ अधिवक्ता, रंजीत बी. मरार, सुश्री लक्ष्मी एन. कैमल, संतोष एम. जे., हर्षवर्धन शाह श्याम, अरुण पूमुल्ली, देवेश कुमार शर्मा, विष्णु पद्मांगनत, सुश्री आशु जैन, एम. गिरीश कुमार, अंकुर कुलकर्णी, शरत एस. जनार्दनन, विजय कुमार, गौरव अग्रवाल, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए। जयंत मुथ राज, वरिष्ठ अधिवक्ता, हर्षद वी. हमीद, दिलीप पूलाक्कोट, सुभाष चंद्रन के. आर., श्रीमती एशली हर्षद, अधिवक्ता।उत्तरदाता के लिए।

सर्वोच्च
न्यायालय का
निर्णय/आदेश

न्याय

संजय करोल, जे।

1. वर्तमान अपीलें 2004 की आपराधिक अपील में एनाकुलम में केरल उच्च न्यायालय द्वारा पारित 5 तारीख के अंतिम निर्णय और आदेश से उत्पन्न होती हैं, जिसमें 2003 के सत्र मामले में कोल्लम के सत्र न्यायाधीश द्वारा पारित 3 तारीख के फैसले और आदेश को स्वीकार किया गया था, जिसमें वर्तमान अपीलकर्ता, दो संख्या में, अर्थात् (i) संजीव (अभियुक्त संख्या 10) और (ii) रॉय (अभियुक्त संख्या 4) को भारतीय दंड संहिता की धारा 302, 307 और 326 (इसके बाद 'आई. पी. सी. '), धारा 55 (ए), (एच), (आई) और धारा 57 (ए) (आई. पी. सी.) की धारा 120 बी के तहत दोषी ठहराया गया था। उन्हें अन्य सजाओं के साथ-साथ समवर्ती रूप से चलने का आदेश देते हुए धारा 272 और धारा 57 (ए) (1) (ii) के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

2. विचाराधीन घटना शराब के जहर से संबंधित है, जिसके परिणामस्वरूप 7 निर्दोष लोगों की मौत हो गई, 11 लोग अंधे हो गए और 40 से अधिक लोग घायल हो गए।

3. अभिलेख से उभरने वाला अभियोजन मामला, जैसा कि नीचे दिए गए न्यायालयों द्वारा भी निर्धारित किया गया है, इस प्रकार है:

आई. 04.04.2003 को, शाम लगभग 7 बजे, A1, A3, A10 और A11 ने A1 द्वारा संचालित आउटलेट के माध्यम से गैरकानूनी लाभ के लिए स्पिरिट के साथ मिथाइल अल्कोहल मिलाने की साजिश रची। इस साजिश को आगे बढ़ाते हुए, ए 10 और ए 11 ने 245 में 'बायोसोल' के रूप में लेबल किए गए मिथाइल अल्कोहल वाले 21 डिब्बे (प्रत्येक 5 एल के) लाए।

साजिव बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 246 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 15 एस. सी. आर.

ए 10 के स्वामित्व वाली मारुति कार ए 1 और ए 3 के निवास पर 05.04.2003 पर है।

ii. इसके बाद, ए 2, ए 7 और ए 8 ने ए 2 के स्वामित्व वाली एंबेसडर कार में ए 1 और ए 3 के निवास पर स्पिरिट लाया। A10 और A11 द्वारा आपूर्ति की गई मिथाइल अल्कोहल को A1 और A3 द्वारा इस स्पिरिट के साथ मिलाया गया और A1 के आउटलेट के माध्यम से बेचा गया। A4, A5, A6, A9 और A12 ने इस बिक्री में A1 की सहायता की।

iii. 09.04.2003-10.04.2003 पर नकली शराब पीने से A4 और A12 सहित सात लोगों की मौत हो गई। पीडब्लू 1-9 और 11-12 भी उक्त शराब पीने के बाद बीमार पड़ गए। पीडब्लू 70, डीवाईएसपी ने घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की और पीडब्लू 67, एडिशनल के साथ जांच शुरू की। उप-निरीक्षक, आंचलुम्मोड पुलिस थाना। बयान दर्ज करने के बाद, पी. डब्ल्यू. 67 ने आई. पी. सी. की धारा 34 और आबकारी अधिनियम की धारा 57 ए के साथ धारा 307 के तहत एफ. आई. आर. (Ex.P186) दर्ज की।

iv. अभियोजन पक्ष ने 76 गवाहों की जांच की और सामग्री वस्तुओं (इसके बाद 'एमओ') एमओ 1 से एमओ 29 के साथ पी1 से पी259 को चिह्नित किया। बचाव पक्ष ने मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया। प्रस्तुत साक्ष्य पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, निचली अदालत ने ऊपर चर्चा किए गए तरीके से अभियुक्त व्यक्तियों को दोषी ठहराया।

4. विचारण न्यायालय ने विस्तृत विचार के बाद, दिनांक 1 के सामान्य निर्णय के माध्यम से, विभिन्न अपराधों के लिए मुकदमे का सामना कर रहे अभियुक्त व्यक्तियों को दोषी ठहराया और उनके लिए सजा सुनाई। अभियुक्त सं. 1, 2, 5-9, 10 और 11 ने निचली अदालत से उच्च न्यायालय में अपील की। उच्च न्यायालय ने इन अभियुक्त व्यक्तियों के खिलाफ निचली अदालत के फैसले को स्वीकार कर लिया। उभरते हुए चित्र को नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया गया है:

नहीं।		नाम
ट्रायल कोर्ट		उच्च न्यायालय
अपराध	सजा दी गई	-
1	ए 1-थम्पी	
आई. पी. सी.- S.302 और 120 बी	आजीवन कारावास (302) और 10 साल के लिए आर. आई. (120 बी); Rs.50,000 नहीं	
सभी अपराधों के लिए दोषसिद्धि याचिका दायर	आई. पी. सी.- S.307	7 वर्षों के लिए आर. आई.-रु. 50, 000 नहीं
आई. पी. सी.-	7 वर्षों के लिए	

S.326	आर. आई.-रु. 50, 000 नहीं
-------	-----------------------------

आबकारी अधिनियम-धारा 57 (ए) (1) (ii)			आजीवन कारावास; रु। 50, 000 नहीं	
आबकारी अधिनियम-धारा 55 (ए), (एच) और (आई)			आर. आई. 7 वर्षों के लिए; रु. 7,00,000 शुल्क	
2	ए 2- साजी @प रिप्प ल्ली साजी	आब कारी अधि नियम -धारा 55 (ए) (आई)	आर. आई. 10 वर्षों के लिए; रु। 2,00 ,000 नहीं	सभी अपरा धों के लिए दोष सिद्धि याचि का दायर
3	ए 3- शोभ ना @मा या	आब कारी अधि नियम -धारा 55 (क)	1 वर्ष के लिए आर. आई. -रु. 1,00 ,000 नहीं	कोई अपी ल पसंद नहीं की जाती
4	ए 4- शाजी @जि नू शाजी	दम तोड़ दिया।		
5			ए 5-राजेश @बाई	
आब कारी अधि नियम	आर. आई. 10 वर्षों	सभी अपराधों के लिए दोषसिद्धि याचिका दायर		

-धारा 55 (ए) (आई)	के लिए; रु। 2,00 ,000 नहीं	
6	ए 6-हुसैन	
7	ए 7-सोनी	
8	ए 8-विपिन बी. नायर	
9	ए 9-संतोष	
10 11	ए 10-संजीव ए 11-रॉय	
आई. पी. सी.- S.302 और 120 बी	आजीवन कारावास (302) और 5 साल के लिए आर. आई. (120 बी); Rs.25,000 नहीं	
सभी अपराधों के लिए दोषसिद्धि याचिका दायर		
आई. पी. सी.- S.307	5 वर्षों के लिए आर. आई.-रु. 25, 000 नहीं	
आई. पी. सी.- S.326	5 वर्षों के लिए आर. आई.-रु. 25, 000 नहीं	
आबकारी अधिनियम-धारा 57 (ए) (1) (ii)	आजीवन कारावास; रु। 25, 000 नहीं	
आबकारी अधिनियम-धारा 55 (ए), (एच) और (आई)	5 वर्षों के लिए आर. आई.-रु. 5,00,000 शुल्क	
12	ए 12- प्रशां थन	मुकदमे के दौरान हुई मौत

5. अभियुक्त नं. 1 ने उच्च न्यायालय के आदेश के विरुद्ध एस. एल. पी. (सी. आर. एल.) एम. डायरी No.2018/2016 का नेतृत्व किया था, जिसे इस न्यायालय द्वारा 247 के माध्यम से खारिज कर दिया गया था।

दिनांकित आदेश 29.01.2016। इसलिए, ए 1 का दोषसिद्धि मान्य है। किसी अन्य अभियुक्त ने इस न्यायालय में अपील नहीं की।

6. अभियुक्त Nos.10 और 11 ने केरल उच्च न्यायालय के अंतिम निर्णय और आदेश के खिलाफ विशेष अनुमति द्वारा तत्काल अलग-अलग अपीलों का नेतृत्व किया है, जिसमें उनकी दोषसिद्धि को बरकरार रखा गया है, जो 2011 की आपराधिक अपील No.1154 और 2015 की आपराधिक अपील No.567 के रूप में दर्ज की गई थी।

7. इस न्यायालय के समक्ष विचार के लिए जो प्रश्न उत्पन्न होता है वह यह है कि क्या ए 10 और ए 11 पर विचारण न्यायालय और उच्च न्यायालय द्वारा दी गई दोषसिद्धि और सजा कानूनी रूप से टिकाऊ है या नहीं।

विचारण न्यायालय और उच्च न्यायालय के निष्कर्ष

8. 2003 के सत्र मामले में विचारण न्यायालय ने विशाल साक्ष्य पर विस्तृत विचार करने के बाद ए 10 और ए 11 को दोषी ठहराते हुए निम्नलिखित निर्णय दिए:

आई. घायल व्यक्तियों और मृतक के परिवार के सदस्यों और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को साबित करने वाले डॉक्टरों की गवाही को देखते हुए, ट्रायल कोर्ट ने अभियोजन पक्ष को सभी उचित संदेह से परे साबित करने के लिए कहा कि मृत्यु का कारण और व्यक्तियों को दम घुटने वाली चोटें (पीडब्लू 21 को छोड़कर) केवल मिथाइल अल्कोहल के साथ मिश्रित नकली शराब के सेवन के कारण थीं।

ii.रिकॉर्ड पर भारी सबूत हैं कि ए 1 अवैध शराब का व्यवसाय चलाता था।

iii.रिलायंस को रामनारायण पोपली बनाम सीबीआई 1 और पी. के. पर रखा गया था।

नारायणन बनाम केरल राज्य 2 का प्रभार घर लाने के लिए

साजिश और पीडब्लू23, पीडब्लू24, पीडब्लू11 और पीडब्लू18 की भौतिक गवाही से यह स्पष्ट है कि 04.04.2003 पर, तीनों, यानी ए 1, ए 10 और ए 11 ने एक साजिश रची और उसे आगे बढ़ाते हुए, मिथाइल अल्कोहल (बायोसोल) वाले 21 डिब्बे ए 1 के घर पर वितरित किए गए। इसके अलावा, गवाहों, पी. डब्ल्यू. 25 से 35 और पी. डब्ल्यू. 76 पर विचार करने पर, ट्रायल कोर्ट ने कहा कि यह सुरक्षित रूप से माना जा सकता है कि बायोसोल के 21 डिब्बे ए 1 के घर ले जाया गया और

1 (2003) एस. सी. सी. (सी. आर. एल.) 869 2 (1995) 1 एस. सी. सी.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

ए 3 में मिथाइल अल्कोहल था। यह भी देखा गया कि ए 11 अपने भाई की ओर से मिथाइल अल्कोहल की आपूर्ति करने वाले आर. आर. वितरकों को चला रहा था। रिलायंस को पीडब्लू 44 द्वारा की गई फॉरेंसिक जांच में भी रखा गया था जिसमें यह राय दी गई थी कि पीडब्लू 76 (आईओ) द्वारा ए 1, एमओ 15 श्रृंखला और एमओ 31 श्रृंखला (पीडब्लू 27 द्वारा उत्पादित बायोसोल डिब्बे) के निवास से बरामद किए गए 21 डिब्बे उसी सांचे से बनाए गए हैं।

iv. ए 11 के घर के परम्ब (लॉन) से जली हुई प्लास्टिक सामग्री की बरामदगी, जिसमें मिथाइल अल्कोहल का पता चला था, को घटना से नहीं जोड़ा जा सकता है।

9. उच्च न्यायालय ने कहा कि पीडब्लू 11 की गवाही से पता चलता है कि ए 10 और ए 11 ने ए 1 के साथ रची गई साजिश को आगे बढ़ाने के लिए एक मारुति कार में 21 डिब्बों में ए 1 के आवास पर बायोसोल वितरित किया था। इसके अलावा, ए 11 के एक उद्यम, आरआर डिस्ट्रीब्यूटर्स के रिकॉर्ड को ए 1 को बायोसोल के 21 डिब्बों की डिलीवरी को छिपाने के प्रयास के साथ विशिष्ट सी प्रविष्टियां करके गलत तरीके से संपादित किया गया था। इसके अलावा, अदालत ने पाया कि अभिलेख पर सामग्री के समग्र अवलोकन पर, यह नहीं कहा जा सकता है कि जांच में कोई गंभीर असंवेदनशीलता या अवैधता थी। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, विवादित फैसले के अनुसार, ए 10 और ए 11 को दी गई दोषसिद्धि और सजा को स्वीकार कर लिया गया।

अभियुक्त व्यक्तियों की ओर से प्रस्तुतियाँ

10. इन दोनों दोषियों (अपीलकर्ताओं) के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील और विद्वान वकील का कहना है कि किसी भी कल्पना के विस्तार से साजिश के कार्य को उनके प्रति जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

11. काल्पनिक रूप से मानते हुए कहा जा सकता है कि इन दोषियों ने एक स्वतंत्र व्यावसायिक लेनदेन के रूप में स्पिरिट, जो कि इथेनॉल है, की आपूर्ति की थी। फिर भी, अंतिम उत्पाद को मिलाने और अवैध रूप से बेचने का तथ्य उनके लिए जिम्मेदार नहीं है, विशेष रूप से, एक उचित संदेह से परे स्थापित साजिश के किसी भी तत्व के अभाव में; इसलिए, देश के दंडात्मक कानूनों के तहत दोषसिद्धि का कोई सवाल ही नहीं है।

12. जहाँ तक अबकारी अधिनियम की धारा 57 (1) (ए) का संबंध है, यह प्रस्तुत किया गया था कि यह लागू नहीं है, क्योंकि उन्होंने न तो प्रतिबंधित उत्पाद को बेचा है और न ही मिश्रित किया है।

249

SAJEEV बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 250

केरल राज्य की ओर से प्रस्तुतियाँ

13. केरल राज्य की ओर से, विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया है कि अभियोजन पक्ष ने ए 10 और ए 11 के खिलाफ साजिश के आरोप को घर लाने के लिए पर्याप्त सबूत रिकॉर्ड पर रखे हैं। ए 10

ए 11 का एक करीबी सहयोगी है और एक साजिश में, उन्होंने अवैध रूप से बेची जा रही सामग्री और इसकी खरीद के उद्देश्य की पूरी जानकारी के साथ ए 1 को मिथाइल अल्कोहल बेचा।

न्यायमित्र की ओर से प्रस्तुतियाँ

14. विद्वान वकील, श्री गौरव अग्रवाल को इस न्यायालय द्वारा न्यायालय की सहायता के लिए दिनांक 1 के आदेश के अनुसार न्यायमित्र के रूप में नियुक्त किया गया था। न्यायमित्र ने अभिलेख में रखते हुए चार भागों में अपनी दलीलें प्रस्तुत की हैं: (क) सुसंगत साक्ष्य; (ख) सुसंगत प्रदर्शन; (ग) साक्ष्यों का सुसंगत भाग; और (घ) ए 10 और ए 11 द्वारा निभाई गई भूमिका को दर्शाने वाला एक चार्ट।

हमारा दृष्टिकोण

15. निचली अदालतों ने ए 1 को अवैध शराब व्यवसाय का सरगना माना है। ए 1 के तहत दोषसिद्धि इस न्यायालय तक पहुँचाई गई है। अतः जिन मुद्दों पर विचार करने की आवश्यकता है वे हैं: (क) ए 10 और ए 11 के बीच संबंध और ए 1 के साथ उनके संबंध; और (ख) अवैध शराब की आपूर्ति और बिक्री में बायोसोल की आपूर्ति और उसके बाद द्वेष की साजिश रचने में उनमें से प्रत्येक द्वारा निभाई गई भूमिका।

16. निर्विवाद रूप से, मृतक की मृत्यु का कारण मिथाइल अल्कोहल के कारण होने वाला जहर है। इसी तरह व्यक्तियों को भी इस तरह के सेवन के परिणामस्वरूप अपने शरीर के अंगों पर चोटें आती हैं।

17. इस पृष्ठभूमि में, अब हम ए 10 और ए 11 के संबंध में अभियोजन पक्ष के मामले की जांच करने के लिए आगे बढ़ते हैं, जैसा कि अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही के माध्यम से सामने आया है।

18. पीडब्लू 11, राजेश ने अपनी गवाही में कहा है कि वह ए 1 को एक राजमिस्त्री के रूप में उनके साथ काम करने के लिए जानता था। 05.04.2003 पर, वह इस तरह के काम करने के लिए A1 के आवास पर मौजूद थे। उस समय, ए 10 (जिसे उन्होंने पहले भी देखा था) और ए 11 शाम करीब 7 बजे राख रंग की मारुति कार में आवास पर पहुंचे। कार से कार्डबोर्ड के 3-4 डिब्बे निकाले गए। इसके अलावा, ए 3 और ए 4 ने 35 एल के 3 डिब्बे लाए, जिन्हें तैयार किया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

ए 3 और ए 4 द्वारा कार से निकाले गए कार्डबोर्ड बॉक्स से निकाले गए डिब्बों की सामग्री। इस प्रक्रिया के समाप्त होने के बाद, पीडब्लू 11 ने कमलम्मा की संपत्ति तक डिब्बे ले जाने में ए 4 की सहायता की। इसके अलावा, ए 10 और ए 11 ने ए 1 के आवास से नकदी प्राप्त की और चले गए। उल्लेखनीय है कि घटना के परिणामस्वरूप पी. डब्ल्यू. 11 घायलों में से एक था और उसने अदालत में ए 10 और ए 11 की पहचान की है। उन्होंने सही ढंग से उस बड़े पात्र की पहचान की जिसमें डिब्बे

खाली किए गए थे, जिसे एमओ 14 श्रृंखला के रूप में चिह्नित किया गया था; कार्डबोर्ड बॉक्स से डिब्बे, जिसे एमओ 15 श्रृंखला (संख्या में 21) के रूप में चिह्नित किया गया था और ए 10 की मारुति कार, जिसे एमओ 16 के रूप में चिह्नित किया गया था। उनकी गवाही के प्रतिपरीक्षा भाग में कुछ भी सामग्री या महत्वपूर्ण सामने नहीं लाया जा सकता है, जिससे उनके संस्करण को किसी भी तरह से संदिग्ध माना जा सकता है।

19. पीडब्लू 18, विन्सेंट ए 1 का पड़ोसी है। भले ही यह गवाह शत्रुतापूर्ण हो गया, क्योंकि उसे याद नहीं था कि उसने ए 10 और ए 11 को देखा था, फिर भी, विशेष रूप से, उसने ए 10 की कार (एमओ 16) की पहचान की जिसमें अपीलकर्ताओं द्वारा ए 1 के आवास पर मिथाइल अल्कोहल लाया गया था। यह स्थापित कानून है कि शत्रुतापूर्ण गवाह की गवाही को इस हद तक स्वीकार किया जा सकता है कि संस्करण उसकी सावधानीपूर्वक जांच पर निर्भर करने योग्य पाया जाए। ऐसे गवाह की गवाही पर भरोसा किया जा सकता है और इसे रिकॉर्ड से धुल जाने के रूप में नहीं माना जा सकता है। [संदर्भ लें:

मोहम्मद नौशाद बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) 3 (3-न्यायाधीशों की पीठ); हरि और अन्न. वी. यूपी राज्य। 4 (3-न्यायाधीश पीठ) और कोली लखमनभाई चनाभाई बनाम।

गुजरात राज्य 5 (2-न्यायाधीश पीठ)] 20. पीडब्लू 23, विनोद ए 1 का परिचित है। उन्होंने आत्मा को प्राप्त करने और इसे अरक में परिवर्तित करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी और ए 1 के निवास पर ए 10 और ए 11 को कई बार देखा। इसके अलावा, वह पीडब्लू 11 के संस्करण की पुष्टि करते हैं कि ए 10 और ए 11 दोनों ए 1 के निवास पर 05.04.2003 पर कार्डबोर्ड बॉक्स लाए थे। इसके अलावा, इन गत्ते के डिब्बों में से, एमओ 15 श्रृंखला से मिलते-जुलते स्पिरिट वाले डिब्बों को बड़े डिब्बों में खाली कर दिया गया था। साथ ही, उन्होंने अदालत में मौजूद सभी अभियुक्तों की सही पहचान की। 21. ए 1 के मित्र पी. डब्ल्यू. 24, सारोस, ए 1 के निवास पर ए 10 और ए 11 की यात्रा और एम 015 श्रृंखला के डिब्बों की डिलीवरी के संबंध में पी. डब्ल्यू. 11 और पी. डब्ल्यू. 23 के संस्करण की पूरी तरह से पुष्टि करते हैं, जिन्हें 35 एल मापने वाले मेथनॉल वाले 3 बड़े डिब्बों में डाला गया था।

3 2023 एससीसी ऑनलाइन एससी 784 4 2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 1131 5 (1999) 8 एससीसी 624 251

साजिव बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 252

22. उपरोक्त गवाहों की गवाही के संयुक्त पठन से जो स्थापित होता है वह यह है: (क) ए 1 के लिए ए 10 और ए 11 ज्ञात थे; (ख) ए 10 और ए 11 अन्य अभियुक्त व्यक्तियों/स्वतंत्र व्यक्तियों की उपस्थिति में ए 1 के आवास पर गए; और (ग) कुछ सामग्री जो कथित रूप से मिथाइल अल्कोहल है, 21 डिब्बों में आपूर्ति की गई थी, जिन्हें 35 एल के 3 डिब्बों में खाली किया गया था और ए 1 के आवास पर संग्रहीत किया गया था। इसे ध्यान में रखते हुए, हम गवाहों के अगले समूह से पूछताछ करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

23. पीडब्लू25 शीजा ने अपनी गवाही में कहा कि उन्होंने ए 11 को अपना फार्मसी लाइसेंस प्रदान किया, जिससे वह अपना आर. आर. वितरक शुरू कर सके। 24. पी. डब्ल्यू. 26, वायलेट ने अटिंगल में आर. आर. डिस्ट्रीब्यूटर्स के नाम से ए 11 के एफ. आई. आर. एम में रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम किया। उनके कथन के अनुसार, हालांकि ए 11 इस एफ. आई. आर. एम. को चला रहा है लेकिन लाइसेंस उनके भाई रोनी (पी. डब्ल्यू. 35) के नाम पर है। अदालत में, उन्होंने सही ढंग से ए 11 की पहचान की, जो सर्जिकल स्पिरिट, रसायनों, सुइयों और प्रयोगशाला उपकरणों के वितरण के व्यवसाय में है, जिसके लिए एक स्टॉक रजिस्टर रखा गया था। एफ. आई. आर. एम. ने वेली में एक अन्य एफ. आई. आर. एम. से 24 डिब्बे खरीदे थे, जिनमें से प्रत्येक बायोसोल के 5 एल थे। वह ऑर्डर बुक (Ex.P4), स्टॉक रजिस्टर (Ex.P5) और बिल बुक (Ex.P6) और बायोसोल (कुल 21 डिब्बे) से संबंधित बिल बुक में दर्ज किए जा रहे निम्नलिखित लेनदेन की गवाही देती है:

आई. मेडिकल लैब ने 01.03.2003, Ex.P6 (a) पर 5 डिब्बे खरीदे। ii. सदर्न लैब ने 06.03.2003, Ex.P6 (b) पर 2 डिब्बे खरीदे। iii. साज अस्पताल ने 08.03.2003, Ex.P6 (c) पर 1 कैन खरीदा। iv. केवी अस्पताल ने 12.03.2003, Ex.P6 (d) पर 2 डिब्बे खरीदे। v. होली क्रॉस ने 14.03.2003, Ex.P6 (e) पर 1 कैन खरीदा। vi. पार्वती लैब ने 15.03.2003, Ex.P6 (f) पर 4 डिब्बे खरीदे।

vii. कोशी डेंटल क्लिनिक ने 22.03.2003, Ex.P6 (g) पर 1 कैन खरीदा। viii. सिटी हॉस्पिटल ने 26.03.2003, Ex.P6 (h) पर 2 डिब्बे खरीदे। ix. मेट्रो लैब ने 31.03.2003, Ex.P6 (i) पर 1 कैन खरीदा। x. कॉसमॉस लैब ने 02.04.2003, Ex.P6 (j) पर 1 कैन खरीदा। xi. आधुनिक प्रयोगशाला ने 04.04.2003, Ex.P6 (k) पर 1 कैन खरीदा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

25. पी. डब्ल्यू. 27. रमेशन उस एफ. आई. आर. एम. के मालिक हैं जिसने पी. डब्ल्यू. 26 द्वारा अपदस्थ किए गए आर. आर. वितरकों के एफ. आई. आर. एम. को बायोसोल बेचा था। वह बिल (Ex.P12) के माध्यम से प्रत्येक 5 एल के 24 डिब्बों का ऑर्डर देने और वितरित करने के तथ्य की गवाही देता है। उन्होंने अदालत में निर्विवाद रूप से ए 11 की पहचान की और विशेष रूप से, गवाही दी कि उनके द्वारा दिया गया बायोसोल एमओ 15 श्रृंखला के समान डिब्बों में था, जिसे एमओ 31 श्रृंखला के रूप में चिह्नित किया गया था, जिसमें बायोसोल युक्त नमूना जार था जिसमें 100% मिथाइल अल्कोहल था।

26. बायोसोल की खरीद और वितरण के लेन-देन को उचित संदेह से परे स्थापित किए जाने के साथ, आगे यह भी जांच करने की आवश्यकता है कि क्या ए 11 के एफ. आई. आर. एम. द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड को गढ़ा गया था या नहीं। ऐसा करते हुए, हम कथित खरीदारों की गवाही की जांच करते हैं, जैसा कि रिकॉर्ड में दर्शाया गया है।

27. पी. डब्ल्यू. 28, अंसार अस्पताल चलाने वाले डॉ. नीलनंद सरमा, आर. आर. वितरकों से बायोसोल खरीदने से इनकार करते हैं। इसी तरह, पीडब्लू 29 डॉ. ए. एम. अब्दुल कुथूर, सिटी अस्पताल चला रहे हैं; पीडब्लू 30, डॉ. विजय चंद्रन नायर, केवी अस्पताल चला रहे हैं; पीडब्लू 31 सुनील, कॉसमॉस लैब चला रहे हैं; पीडब्लू 32 बीजी बी, कोशी डेंटल क्लिनिक में सहायक और पीडब्लू 33 डॉ. रॉय जॉर्ज आरआर डिस्ट्रीब्यूटर्स से बायोसोल की कोई भी खरीद करने से इनकार करते हैं और पीडब्लू 26 द्वारा चिह्नित बिल रसीदों से इनकार करते हैं। इस प्रकार, इन व्यक्तियों को माल की आपूर्ति करने के लिए अपीलकर्ताओं द्वारा स्थापित बचाव को स्वीकार करते हुए, ऐसी प्रविष्टियों को वास्तविक माना जाता है।

28. पीडब्लू 35, रोनी ए 11 का बड़ा भाई है। उन्होंने अपदस्थ किया कि वह आर. आर. डिस्ट्रीब्यूटर्स नामक एक संगठन चला रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने लाइसेंस प्राप्त किया है। पी. डब्ल्यू. 26 रिसेप्शनिस्ट है। यह गवाह पुलिस को पहले बयान देने से इनकार करता है और उसे शत्रुतापूर्ण घोषित किया जाता है। इसलिए, उनकी गवाही के प्रतिपरीक्षा भाग में, यह पता चलता है कि किराया विलेख (Ex.P14) का स्टाम्प पेपर A11 के नाम पर खरीदा गया था।

29. उपरोक्त गवाह इस तथ्य को सामने लाते हैं कि वास्तव में यह ए 11 है, जो एफ. आई. आर. एम. आर. डिस्ट्रीब्यूटर्स को चला रहा है और उसका प्रबंधन कर रहा है। इसके अलावा, बायोसोल, जिसमें 100% मिथाइल अल्कोहल होता है, ए 11 द्वारा अपने एफ. आई. आर. एम., आर. आर. डिस्ट्रीब्यूटर्स के माध्यम से खरीदा गया था। इस मिथाइल अल्कोहल को कई अलग-अलग संस्थाओं को बेचा जाता है। हालांकि, पी. डब्ल्यू. 28 से पी. डब्ल्यू. 33 तक, कथित खरीदारों ने इस तरह का कोई लेनदेन करने या मिथाइल अल्कोहल वाले कथित डिब्बों की डिलीवरी लेने से इनकार किया है।

253

साजिव बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 254

30. इसलिए, यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि आर. आर. वितरकों (Ex.P6) के रजिस्टर में किए गए लेनदेन वास्तविक थे और तैयार किया गया रिकॉर्ड केवल कानून की प्रक्रिया के अनुसार वास्तविक ग्राहकों को बिक्री दिखाने के लिए था। स्वाभाविक रूप से, यह है कि ए 11 ने अपने वित्तीय संस्थान के माध्यम से बायोसोल खरीदा था, लेकिन किसी भी वैध स्रोत को प्रदान करने में विफल रहा जिसे इसकी आपूर्ति की गई थी या जहां इसका उपयोग किया गया था, इस तथ्य का वह खंडन करने में विफल रहे।

31. अब हम इस स्तर पर इन अभियुक्त व्यक्तियों के खिलाफ फॉरेंसिक साक्ष्य पर चर्चा करते हैं।

32. पीडब्लू 44, जेम्स फिलिपोस एफएसएल, त्रिवेंद्रम में संयुक्त निदेशक (जनरल) हैं। उन्होंने एफ. एस. एल. रिपोर्ट (Ex.P30) तैयार करने का सत्यापन किया, जिस पर उनके हस्ताक्षर हैं। एम. ओ. 15 और एम. ओ. 31 श्रृंखला के प्लास्टिक के डिब्बों की उनकी जांच से पता चला कि वे एक ही सांचे से बनाए गए थे। विशेष रूप से, यह तथ्य अभिलेख पर अप्रमाणित बना हुआ है। इसके अलावा, इस गवाही से, यह देखा गया है कि एमओ 15 श्रृंखला के डिब्बे [पीडब्लू 76 द्वारा ए 1 के निवास से

बरामद], जो, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, ए 10 और ए 11 द्वारा ए 1 के निवास को आपूर्ति किए गए थे और एमओ 31 श्रृंखला के डिब्बे, जो बायोसोल की बिक्री में पीडब्लू27 द्वारा प्रदान किए गए डिब्बों का नमूना है, एक ही बनावट और सांचे के हैं।

33. चर्चा किए जाने वाले अगले गवाह पी. डब्ल्यू. 51, सिंधु हैं। अपनी गवाही में, वह कहता है कि उसने एम. ओ. 33 श्रृंखला के डिब्बों (प्रत्येक 35 एल) की एफ. एस. एल. जांच की। परीक्षण किए गए 5 डिब्बों में से 2 डिब्बों में एथिल + मिथाइल अल्कोहल और 3 डिब्बों में मिथाइल अल्कोहल पाया गया।

34. ये गवाह दो प्रासंगिक तथ्यों को प्रकट करते हैं: (a) A11 से A1 को आपूर्ति किए गए डिब्बे उसी डिब्बे के सांचे से हैं जो PW27 द्वारा मिथाइल अल्कोहल की खरीद पर A11 को आपूर्ति किए गए थे; और (b) A1 के निवास से बरामद किए गए 5 डिब्बों में से 3 में मिथाइल अल्कोहल की पुष्टि हुई।

35. इन बयानों पर विचार करने के बाद, हमें यह तय करना होगा कि क्या रिकॉर्ड पर साक्ष्य आईपीसी की धारा 120 बी के तहत साजिश स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। आपराधिक साजिश का गठन करने के लिए तत्व थे

राज्य में इस न्यायालय द्वारा पुलिस अधीक्षक बनाम.

नलिनी और ओआरएस। 6 (3-न्यायाधीश बेंच)। वे इस प्रकार हैं:

6 (1999) 5 एस. सी. सी. 253

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

आई. षड्यंत्र तब होता है जब दो या दो से अधिक व्यक्ति अवैध माध्यमों से किसी अवैध कार्य या कानूनी कार्य को करने या करने के लिए सहमत होते हैं।

ii. आपराधिक साजिश सामान्य कानून के लिए एक अपवाद है, जहां अकेले इरादे से अपराध नहीं होता है। यह एक अपराध करने और समान इरादे वाले व्यक्तियों के साथ हाथ मिलाने का इरादा है।

iii. साजिश निजी तौर पर या गुप्त रूप से रची जाती है। प्रत्यक्ष साक्ष्य द्वारा षड्यंत्र स्थापित करना शायद ही कभी संभव हो। आम तौर पर, साजिश के अस्तित्व और उसके उद्देश्यों का अनुमान अभियुक्त की परिस्थितियों और आचरण से लगाया जाना चाहिए।

iv. जहां समझौते के अनुसरण में, षड्यंत्रकारी व्यक्तिगत रूप से अपराध करते हैं या एक कानूनी कार्य करने के लिए अवैध साधन अपनाते हैं जिसका षड्यंत्र के उद्देश्य से संबंध है, वे सभी ऐसे अपराधों के लिए उत्तरदायी होंगे, भले ही उनमें से कुछ ने सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया हो।

36. इन सिद्धांतों का पालन याकूब अब्दुल रजाक मेमन बनाम महाराष्ट्र राज्य 7 (2-न्यायाधीश पीठ) में किया गया था, जिसमें इस न्यायालय ने दोहराया कि साजिश स्थापित करने के लिए पक्षों के बीच

एक समझौता स्थापित करना आवश्यक है। इसके अलावा, आपराधिक साजिश की जिम्मेदारी संयुक्त है, सभी साजिशकर्ता साजिश के परिणामस्वरूप किए गए प्रत्येक अपराध के कृत्यों के लिए उत्तरदायी हैं। [यह भी देखें: अरविंद सिंह बनाम महाराष्ट्र राज्य 8 (3-न्यायाधीश पीठ); मोहम्मद। नौशाद (ऊपर)]

37. इन सिद्धांतों को मामले में लागू करते हुए, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, यह स्थापित किया जाता है कि (ए) ए 10 और ए 11 ए 1 के लिए ज्ञात थे; (बी) ए 10 और ए 11 अन्य अभियुक्त व्यक्तियों की उपस्थिति में ए 1 के आवास पर गए; (सी) ए 1 के आवास पर मिथाइल अल्कोहल की आपूर्ति और भंडारण किया गया था, इस ज्ञान के साथ कि बेचा जा रहा पदार्थ हानिकारक था; (डी) ए 11 आर आर वितरकों के ए. एफ. एयर चला रहा था, जिन्होंने पहली बार में मिथाइल अल्कोहल की खरीद की और अलग-अलग संस्थाओं को इसकी बिक्री का मनगढ़ंत रिकॉर्ड; (ई) मौतों और चोटों के कारण के बारे में कोई विवाद नहीं है। इसलिए, वर्तमान अपीलार्थियों की ओर से तर्क कि वे ए 1 को नहीं जानते थे और

7 (2013) 13 एससीसी 1 8 (2021) 11 एससीसी 1 255

SAJEEV बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 256

वर्तमान अपराध के साथ कहीं भी जुड़ा हुआ नहीं है और इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए, अभियोजन पक्ष ए 10 और ए 11 की आपराधिक साजिश को ए 1 के साथ स्थापित करने में सफल रहा है।

38. विचार किए जाने वाला एक अन्य पहलू ए 11 द्वारा साक्ष्य का विनाश है, जैसा कि विद्वान न्यायमित्र और केरल राज्य दोनों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 39. जांच अधिकारी के. जे. देवासिया (पीडब्लू 76) ने बयान दिया है कि उनकी उपस्थिति में पीडब्लू 51 ने ए 11 के निवास के दक्षिणी हिस्से में भूमि से सामग्री/नमूने एकत्र किए, जिसे एमओ 49 से एमओ 53 के रूप में चिह्नित किया गया था। यह ए 11 द्वारा दी गई जानकारी को आगे बढ़ाने के लिए था।

40. पीडब्लू 51, एफएसएल सहायक निदेशक ने इन नमूनों का परीक्षण किया, जिन्होंने अपने बयान में कहा कि एमओ 52 को छोड़कर, इन नमूनों में जले हुए प्लास्टिक और मिट्टी शामिल थी, जो सभी मिथाइल अल्कोहल के लिए सकारात्मक परीक्षण किए गए थे। यह अभियोजन पक्ष की कहानी का पूरक है कि ए 11 ने उसे अपराध से जोड़ने वाली आपत्तिजनक सामग्री को जलाकर उसके आवास पर सबूतों को नष्ट करने का प्रयास किया। इसी तरह की परिस्थितियों में, हरियाणा राज्य बनाम कृष्ण 9 (2-न्यायाधीश पीठ) में इस न्यायालय ने प्रतिवादियों को दोषी ठहराते हुए उन्हें बड़ी साजिश से जोड़ने के लिए सबूतों को नष्ट करने के प्रयास में अभियुक्तों के आचरण पर भरोसा किया। हाथ में मौजूद साक्ष्य के लिए इस तर्क को लागू करते हुए, हम ट्रायल कोर्ट के इस अवलोकन से असहमत हैं कि ए 11 के एफ. आई. आर. एम. के पास मिथाइल अल्कोहल के लिए लाइसेंस था और इस साक्ष्य के टुकड़े और घटना की घटना के बीच कोई संबंध नहीं है। इसके विपरीत, ए 11 के निवास से लिए

गए मिट्टी के नमूने में जले हुए प्लास्टिक अवशेष और मिथाइल अल्कोहल के लिए सकारात्मक परीक्षण करने का कोई कारण नहीं है, जो इस सामग्री को विचाराधीन घटना से जोड़ता है।

41. विशेष रूप से, दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 313 के तहत ए 10 और ए 11 प्रत्येक पर कम से कम 627 प्रश्न/परिस्थितियाँ रखी गईं। इस न्यायालय ने कई मौकों पर स्पष्ट किया है कि कानूनी रूप से, अभियुक्त का कर्तव्य है कि वह किसी दोषपूर्ण परिस्थिति का कुछ स्पष्टीकरण प्रदान करे, जिसमें अभियोजन पक्ष अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने की सीमा को पार कर जाता है। हालाँकि, कोई स्पष्टीकरण, बहुत कम, एक प्रशंसनीय, सामने नहीं रखा गया है। पूर्ण इनकार या मौन की स्थिति में, न्यायालय का अधिकार है

9 (2017) 8 एससीसी 204

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

अभियुक्त के विरुद्ध प्रतिकूल निष्कर्ष निकालना। [संदर्भ: फूला सिंह बनाम

हिमाचल प्रदेश राज्य 10 (2-न्यायाधीश पीठ); इंद्रकुंवर बनाम राज्य

छत्तीसगढ़ की 11 (2-न्यायाधीश पीठ)] धारा 313 के तहत दिए गए बयानों में इस मामले को लागू करते हुए, आरोपी व्यक्ति अपने खिलाफ पेश होने वाली दोषपूर्ण परिस्थितियों को सही ठहराने में विफल रहे।

42. दंड संहिता के तहत अपराध के अलावा, आरोपी को आबकारी अधिनियम के प्रावधानों के तहत दोषी ठहराया जाता है। इस प्रकार, आबकारी अधिनियम की प्रासंगिक धाराओं पर चर्चा करना उचित है जिसके तहत इन अभियुक्त व्यक्तियों को दोषी ठहराया गया है। आबकारी अधिनियम की धारा 57 ए का प्रासंगिक भाग इस प्रकार है:

“ S.57A-शराब या हानिकारक पदार्थों आदि के साथ नशीली दवाओं के मिलावट के लिए -

(1) जो कोई भी किसी भी हानिकारक पदार्थ या किसी ऐसे पदार्थ को मिलाता है या मिलाने की अनुमति देता है जिससे मानव जीवन को खतरा हो या जिससे मनुष्यों को गंभीर चोट पहुँचने की संभावना हो, किसी भी शराब या नशीली दवा के साथ, दोषी ठहराए जाने पर, दंडनीय होगा -

((क) यदि, ऐसे कार्य के परिणामस्वरूप, किसी व्यक्ति को गंभीर चोट पहुँचाई जाती है, जिसके लिए कारावास की अवधि दो वर्ष से कम नहीं होगी, लेकिन जो आजीवन कारावास तक हो सकती है, और एक ऐसी सजा जो पचास हजार रुपये तक हो सकती है;

((ख) यदि, ऐसे कार्य के परिणामस्वरूप, किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, मृत्यु या कारावास की अवधि जो तीन वर्ष से कम नहीं होगी, लेकिन जो आजीवन कारावास तक हो सकती है, और जुर्माना जो पचास हजार रुपये तक हो सकता है;

(5) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (1872 का 1) में किसी बात के होते हुए भी-(क) जहां किसी व्यक्ति पर उप-धारा (1) या उप-धारा (2) के तहत अपराध के लिए मुकदमा चलाया जाता है, यह साबित करने का बोझ कि उसने कोई अपराध नहीं किया है या उसे अपराध में शामिल होने की अनुमति नहीं दी है या, जैसा भी मामला हो, किसी भी अपराध के मिश्रण को रोकने के लिए उचित सावधानी बरतने को छोड़ दिया गया है।

10 आकाशवाणी 2014 एससी 1256 11 2023 एससीसी ऑनलाइन 1364 257

साजिव बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 258

उस उप-धारा में किसी भी शराब या मादक दवा के साथ निर्दिष्ट पदार्थ उस पर होगा।

(जोर दिया गया) 43। इस न्यायालय ने चंद्रन बनाम केरल राज्य 12 (2-न्यायाधीश पीठ) में आबकारी अधिनियम की धारा 57 (ए) (1) पर व्यापक रूप से विचार किया। यह देखा गया है कि धारा 57 ए के तहत प्रतिबंध अधिनियम के तहत लाइसेंस धारकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि किसी भी व्यक्ति को संदर्भित करता है जो किसी भी हानिकारक पदार्थ को मिलाता है या मिलाने की अनुमति देता है, जिससे किसी भी शराब के साथ मानव जीवन को खतरा हो सकता है। धारा 57 ए की उप-धारा 5 के तहत आरोपी व्यक्ति पर सबूत का बोझ संवैधानिक है, जिसे इस न्यायालय ने इस मामले में बरकरार रखा है।

पी. एन. कृष्ण लाल बनाम केरल सरकार 13 (2-न्यायाधीश पीठ)।

44. चंद्रन (ऊपर) में इस न्यायालय ने षड्यंत्र के सवाल और आबकारी अधिनियम की धारा 57 ए के तहत दोषसिद्धि के लिए पुरुष कारण पर भी विचार किया। मुख्य अभियुक्त के साथ सह-अभियुक्त व्यक्तियों में से एक की दोषसिद्धि को स्वीकार करते हुए, यह माना गया कि आबकारी अधिनियम की धारा 57 (ए) (1) (ii) के तहत दोषसिद्धि स्वतंत्र रूप से लागू होती है, क्योंकि वह न केवल मेथनॉल मिलाने के व्यवसाय का हिस्सा था, बल्कि उसने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया था। आत्मा के मिश्रण के बारे में ज्ञान का अनुमान लगाने के लिए इस तरह के भाग लेने को पर्याप्त माना जाता था। हम इस मामले से संबंधित टिप्पणियों में से एक को दोहराना उचित समझते हैं:

“117. साजिश के अभाव के बारे में कोई सवाल नहीं हो सकता है। पूरा व्यवसाय अपने आप में एक साजिश थी। यह हानिकारक पदार्थ को मिलाने की साजिश नहीं हो सकती है, लेकिन तथ्य यह है कि व्यवसाय में सफल होने के लिए, जो खुद एक साजिश थी, उन्होंने मिथेनॉल को मिलाया या मिलाने की अनुमति दी और इसका इतना स्वतंत्र रूप से उपयोग किया कि अंततः 31 लोगों की जान चली गई। हम ज्ञान के बारे में तर्क से बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हैं।”

(जोर दिया गया) 45। इसलिए, अपीलार्थियों की ओर से यह तर्क कि आबकारी अधिनियम की धारा 57 (ए) (1) (ii) के तहत अपराध उनके लिए जिम्मेदार नहीं है, खारिज किया जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

46. उपरोक्त परिप्रेक्ष्य और कानून की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, साक्ष्य अधिनियम की धारा 6 और धारा 8 लागू होती है, क्योंकि: (क) न्यायमित्र द्वारा उजागर की गई गवाहों की गवाही से घटना की घटना से कम से कम कुछ दिन पहले आरोपी/दोषियों की मौके पर उपस्थिति का संकेत मिलता है; (ख) आरोपी/दोषी स्पिरिट की आपूर्ति के संबंध में मौके पर मौजूद थे; (ग) आरोपी/दोषी यह जानते हुए कि उन्हें उनके द्वारा आपूर्ति किए गए पदार्थ के बारे में पूरी जानकारी थी जो जहरीले/निषिद्ध प्रकृति के थे और उन्होंने हानिकारक पदार्थ को शराब के साथ मिलाने की अनुमति दी, जिससे मानव जीवन को खतरा हो सकता था (घ) दोषी ए 11 ने जहरीले/निषिद्ध पदार्थ की आपूर्ति के संबंध में जाली रिकॉर्ड बनाया था।

47. अंत में, आबकारी अधिनियम की धारा 55 के प्रासंगिक भाग में कहा गया है: “55. अवैध आयात आदि के लिए-जो कोई भी इस अधिनियम या इस अधिनियम के तहत बनाए गए किसी नियम या आदेश का उल्लंघन करता है:

(क) शराब या किसी मादक पदार्थ का आयात, निर्यात, [परिवहन, पारगमन या उसके पास]; या

xx

xx

xx

(ज) बिक्री के उद्देश्यों के लिए किसी भी शराब की बोतलें; या

(i) शराब] या कोई मादक दवा बेचने या बेचने के लिए दुकान।”

48. संक्षिप्तता के लिए, हमें मिथाइल अल्कोहल के परिवहन, बॉटलिंग और बिक्री से संबंधित साक्ष्य को दोहराने की आवश्यकता नहीं है। धारा 55 में उल्लिखित शराब को धारा 3 (10) के तहत शराब से युक्त या उससे बने किसी भी तरल पदार्थ के रूप में परिभाषित किया गया है। इसलिए, इस बात पर कोई विवाद नहीं हो सकता है कि धारा 55 मिथाइल अल्कोहल के संचरण पर लागू होती है। यह स्थापित किया गया है कि मिथाइल अल्कोहल को पहले ए 11 द्वारा खरीदा गया था, फिर अलग-अलग संस्थाओं को बेचा गया था, हालांकि, इसे ए 1 को प्रदान किया गया था। इन अभियुक्त व्यक्तियों को पूरे समय सामान्य उद्देश्यों के लिए साजिश रचने के लिए स्थापित किया गया है। इसलिए, ए 10 और ए 11 की दोषसिद्धि को आबकारी अधिनियम की धारा 55 (ए) (एच) और (आई) के तहत बरकरार रखा जाना चाहिए।

49. साजिश के हिस्से के रूप में मिथाइल अल्कोहल की बिक्री और स्पिरिट के साथ मिश्रण में हमारे सामने आरोपी व्यक्तियों की संलिप्तता के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ा जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप कई निर्दोष लोगों की मौत हो गई और 259 घायल हो गए।

साजिव बनाम केरल राज्य [संजय करोल, जे.] 260

लोग।ए 10 और ए 11 को आई. पी. सी. की धारा 302, 307, 326 और 120 बी और अबकारी अधिनियम की धारा 57 (ए) (1) (ii) के तहत दोषी ठहराए जाने को बरकरार रखा जाना चाहिए।

50. इसलिए हम मानते हैं कि इस त्रासदी में इन अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा निभाई गई भूमिका के संबंध में उच्च न्यायालय और विचारण न्यायालय द्वारा समवर्ती रूप से आया निष्कर्ष और दोषसिद्धि किसी भी असंवेदनशीलता के लिए पर्याप्त नहीं है और इस न्यायालय के हस्तक्षेप की गारंटी नहीं है।

51. उपरोक्त चर्चा से स्वतंत्र, इस न्यायालय ने समय-समय पर दोहराया है कि समवर्ती दोषसिद्धि में हस्तक्षेप केवल तभी आवश्यक है जब:आई. फाइंडिंग विकृत है।

ii. न्यायनिर्णयन अस्वीकार्य साक्ष्य पर आधारित या निर्मित है।

iii. निम्नलिखित न्यायालयों ने महत्वपूर्ण साक्ष्यों पर विचार नहीं किया है या गलत तरीके से खारिज नहीं किया है जो संतुलन को अभियुक्त के पक्ष में झुकाते हैं।

[संदर्भ: मेकला शिवैया बनाम ए. पी. राज्य 14 (2-न्यायाधीश पीठ); रावासाहेब और ओ. आर. एस. वी. कर्नाटक राज्य 15 (3-न्यायाधीशों की पीठ)]

उच्च न्यायालय और विचारण न्यायालय के निर्णयों के अवलोकन पर, हमारा विचार है कि वर्तमान अपीलकर्ताओं ने उपरोक्त परिस्थितियों में से किसी को भी इस न्यायालय के हस्तक्षेप की गारंटी नहीं दी है।

52. हम लर्नड एमिक्स क्यूरी द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए सराहना के साथ दर्ज करते हैं।

53. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, विवादित निर्णय को अपीलार्थियों की चुनौती विफल हो जाती है।

54. फैसला सुनाए जाने के बाद, हमें दिनांकित 31.10.2023 पत्र के माध्यम से सूचित किया गया है कि अपीलकर्ताओं में से एक, संजीव (2011 का A10-आपराधिक अपील No.1134) का 24.09.2023 पर निधन हो गया है। मामले के उस दृष्टिकोण में, उसकी दोषसिद्धि के खिलाफ अपील समाप्त हो जाती है।

55. ए 11 (रॉय) द्वारा पसंद की गई आपराधिक अपील No.567/2015 को खारिज कर दिया जाता है। इस न्यायालय द्वारा ए 11 को दिनांक 30.06.2016 के आदेश के माध्यम से जमानत दी गई।

रद्द कर दिया जाता है और अपीलार्थी को संबंधित न्यायालय के समक्ष तुरंत आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया जाता है।

56. वर्तमान अपीलों से अलग होने से पहले, हम भौतिक गवाहों के बयानों को रिकॉर्ड में नहीं रखे जाने की प्रथा की निंदा करना उचित समझते हैं, जैसा कि हमारे दिनांकित आदेश 20.07.2023 में दर्ज है। हमने देखा है कि इस तरह की प्रथाएं अक्सर बार-बार स्थगन का कारण बनती हैं, जो विचाराधीनता और अपीलों के निपटारे में देरी की जड़ तक जाती हैं। इसलिए, इस मुद्दे से निपटने के लिए सुझाव देना हमारा दायित्व है।

57. इस पृष्ठभूमि में हमें उच्चतम न्यायालय नियम, 2013 (जिसे 'नियम' कहा जाता है) के आदेश XX का उल्लेख करना चाहिए, जो आपराधिक अपीलों से संबंधित है। नियम 5 के उप-नियम 2 और 3 के अवलोकन से पता चलता है कि आजीवन कारावास या मृत्युदंड की सजा वाली आपराधिक अपीलों में मूल अभिलेखों की भौतिक प्रतियों की मांग की जानी चाहिए। अन्य सभी मामलों में, ऐसे अभिलेखों को बुलाना इस न्यायालय की पीठ के विशिष्ट आदेशों के अधीन है।

58. हम निम्नलिखित सुझाव देते हैं:

i. उप-नियम 3 में 'मूल अभिलेख' शब्दों के सामने 'सॉफ्ट कॉपी' शब्द डालने के लिए संशोधन किया जाए, जिसके परिणामस्वरूप मूल अभिलेखों की ई-प्रतियों की मांग की जा रही है। इससे अदालत को ऐसे अभिलेखों की बहुत तेजी से उपलब्धता के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक दृष्टिकोण की सुविधा भी मिलेगी।

ii. इसके अलावा, नियमों में आवश्यक संशोधन के माध्यम से रिकॉर्ड की सॉफ्ट कॉपी की ऐसी मांग को उन मामलों तक बढ़ाया जाना चाहिए जहां बरी करने या दोषसिद्धि के आदेश के खिलाफ अनुमति दी जाती है।

iii. एक बार प्राप्त होने के बाद अभिलेखों की ऐसी सॉफ्ट कॉपी पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान वकील को प्रदान की जानी चाहिए।

59. हम रजिस्ट्री को निर्देश देते हैं कि वह इस फैसले की एक प्रति भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश के समक्ष उनके दयालु विचार और उचित निर्देशों के लिए रखे, यदि वे ऐसा नहीं मानते हैं।

60. वार्ताकार आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाएगा।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

याचिका खारिज कर दी गई।

निधि जैन

